

---

# Matrisnehah

---

मल्लसुन्दरः

---

## Document Information

---



---

Text title : Matrisnehah 2

File name : mAtRRisnehaH2.itx

Category : misc, sanskritgeet

Location : doc\_z\_misc\_general

Author : vijayan vi. paTTAmbI

Acknowledge-Permission: Vijayan V. Pattambi

Latest update : August 11, 2024

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

August 12, 2024

*sanskritdocuments.org*

---



---

## Matrisnehah

---

### मातृस्नेहः


---



माताऽस्ति मामकं गेहे  
गेहस्य शोभां तनोति ।  
मातरं नित्यं प्रशम्य भक्त्या  
विद्यालयः मया गम्यः ।  
जन्मनः पूर्वं सा साध्वी - मम  
सौभाग्यकारणं जातम् ।  
पूर्वं वयसि च नित्यं जल-  
पानं च भोज्यं च दत्तम् ।  
वर्षायुतकं मे वस्त्रं - तथा  
धारितं सर्वमङ्गेषु ।  
क्षीरं मधुरसंभोज्यं - तथा  
पानाय नित्यं प्रदत्तम् ।  
पुस्तकं स्यूते निक्षिप्य - मम  
हस्ते तथा नित्यं दत्तम् ।  
मध्याह्नभोजनं पात्रे नित्यं  
सस्नेहं मलययच्छम् ।  
मामकमाता मे श्ला - तस्याः  
भाषणं श्रोत्रपियूषम् ।  
प्रत्यक्षदेवता माता - मया  
नित्यं प्रणामश्च कार्यः ॥  
कविता रचना - विजयन् वि. पट्टाभ्नी

*Matrisnehah*

pdf was typeset on August 12, 2024

——  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

